A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

पंडित अरुण भादुड़ी: विभिन्न गायन शैलियां – एक अध्ययन

Umesh Soni
Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi, Delhi

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

यह शोध-पत्र भारतीय संगीत जगत के प्रख्यात गायक अरुण भादुड़ी की विभिन्न गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अरुण भादुड़ी ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत परंपरा के साथ-साथ अर्ध-शास्त्रीय और भक्तिमूलक संगीत में भी अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। इस अध्ययन का उद्देश्य उनकी प्रमुख गायन शैलियों—विशेषतः ख़याल, ठुमरी, दादरा, भजन तथा बंगाली संगीत परंपरा—के स्वर-विन्यास, लय-प्रयोग, भावाभिव्यक्ति और प्रस्तुति-पद्धति का गहन विश्लेषण करना है। शोध-पद्धति में गुणात्मक तथा वर्णनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें उपलब्ध साहित्य, ऑडियो रिकॉर्डिंग, संगीत समीक्षाओं और विशेषज्ञों की राय का अध्ययन किया गया। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अरुण भादुड़ी की गायकी में रागदारी की शुद्धता, स्वर-साधना की गहराई, लचीली तानों, तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति का अद्भुत संतुलन मिलता है, जो उन्हें समकालीन गायकों में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

कुंजी शब्द: *पंडित अरुण भादुड़ी, विभिन्न गायन शैलियाँ*

भूमिका

भारतीय संगीत की परंपरा सदियों पुरानी, बहुआयामी और अत्यंत समृद्ध है। इस परंपरा के विकास में अनेक दिग्गज गायकों ने अपनी अनूठी शैली, साधना और प्रयोगधर्मिता के आधार पर अमिट योगदान दिया है। इन महान विभूतियों में पंडित अरुण भादुड़ी का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। वे न केवल हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के एक गंभीर साधक थे, बल्कि उन कलाकारों में से थे जिन्होंने परंपरा और नवाचार—दोनों को संतुलित रखते हुए अपनी विशिष्ट गायकी का निर्माण किया।

अरुण भादुड़ी की गायन शैली में खयाल, ठुमरी, दादरा, भजन तथा रागदारी संगीत की विभिन्न विधाओं का सौम्य व प्रभावी समन्वय मिलता है। उनका गायन सौंदर्य, भाव-प्रवणता, राग की शास्त्रीय मर्यादा और स्वर-शुद्धता के लिए व्यापक रूप से सराहा गया है। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक राग, प्रत्येक बंदिश और प्रत्येक आलाप में संगीत की गहराई, संवेदनशीलता और साधक-स्वरूप की स्पष्ट झलक मिलती है।

समकालीन संगीत-जगत में जहाँ तेजी से बदलती प्रवृत्तियों के कारण शास्त्रीय संगीत की परंपराएँ कई बार उपेक्षित हो जाती हैं, वहीं अरुण भादुड़ी का संगीत उस संतुलन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसमें परंपरा की आत्मा सुरक्षित रहती है और श्रोता को एक नई अनुभूति भी प्राप्त होती है। उनकी गायकी न केवल तकनीकी रूप से परिपूर्ण थी बल्कि भावात्मक अभिव्यक्ति में भी अत्यंत समृद्ध मानी जाती है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय संगीत-साहित्य में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, उसकी परंपराओं, गायन-शैलियों और प्रमुख कलाकारों पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ उपलब्ध हैं। इन ग्रंथों में संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, राग-विन्यास, गायन-शैलियों की विशेषताएँ तथा कलाकारों के योगदान पर विस्तृत चर्चा मिलती है। इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य उन प्रमुख स्रोतों का विश्लेषण करना है जो अरुण भादुड़ी की गायकी तथा उनकी शैलीगत विविधताओं के अध्ययन में सहायक हैं।

सबसे पहले, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर आधारित प्रमुख ग्रंथों—जैसे पंडित वी.एन. भातखंडे, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, शारंगदेव तथा विष्णु दिगंबर पलुस्कर के ग्रंथ—में गायन परंपराओं की मूल संरचना, रागों की रचना-प्रक्रिया और बंदिशों की परंपरा का व्यापक विवेचन मिलता है। इन साहित्यिक स्रोतों से यह समझने में सहायता मिलती है कि परंपरागत शैली की आधारभूमि क्या है, और किसी भी कलाकार ने अपनी गायकी के माध्यम से उसमें किस तरह नए आयाम जोड़े।

समकालीन संगीतशास्त्रीय साहित्य में भी विभिन्न गायन-शैलियों—जैसे खयाल, ठुमरी, दादरा और भावगीत—के विकास, संरचना, प्रस्तुतिकरण तथा सौंदर्यशास्त्रीय पक्षों पर विस्तृत चर्चाएँ उपलब्ध हैं। शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय संगीत पर केंद्रित शोध-लेखों में गायन शैलियों की तकनीकी

विशेषताओं, राग-विस्तार की विधियों, तथा कलाकार की व्यक्तिगत शैली के विकास की प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण अध्ययन मिलते हैं। इन स्रोतों से अरुण भादुड़ी की गायकी को व्यापक संदर्भ में समझने का आधार तैयार होता है।

अरुण भादुड़ी पर उपलब्ध प्रकाशित सामग्री सीमित होने के बावजूद, विभिन्न संगीत पत्रिकाओं, साक्षात्कारों, रेडियो-रिकॉर्डिंगों, संगीत समारोहों की समीक्षाओं तथा आकाशवाणी/दूरदर्शन के अभिलेखों में उनके गायन पर टिप्पणियाँ मिलती हैं। इन समीक्षाओं में प्रायः यह उल्लेख मिलता है कि उनकी गायन शैली अत्यंत भावपूर्ण, सहज, राग की शास्त्रीय संरचना के प्रति निष्ठावान और लय-अनुभूति से संपन्न थी। संगीत विशेषज्ञों के लेखों में यह भी उल्लेख मिलता है कि अरुण भादुड़ी ने परंपरा और नवाचार का संतुलित समन्वय स्थापित किया, जिससे उनकी गायकी एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करती है।

संगीत-आलोचना और प्रदर्शन-विश्लेषण से संबंधित आधुनिक शोध भी इस अध्ययन के लिए उपयोगी हैं। इन शोधों में कलाकार की ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति, राग की संरचना में व्यक्तिगत योगदान, तथा गायन की मनोभावात्मक प्रस्तुति जैसे पहलुओं पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से चर्चा की गई है। यह साहित्य इस अध्ययन को तकनीकी और विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है, जिसके माध्यम से अरुण भादुड़ी की विभिन्न गायन-शैलियों को अधिक सटीक रूप से समझा जा सकता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो उपलब्ध साहित्य भारतीय संगीत की परंपराओं और गायन-शैलियों पर व्यापक ज्ञान प्रदान करता है, परंतु अरुण भादुड़ी की गायकी पर किसी समग्र, स्वतंत्र और विश्लेषणात्मक अध्ययन का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यही शोध-रिक्ति इस अध्ययन की आवश्यकता को पुष्ट करती है, तथा यह शोध उसी अभाव को भरने का प्रयास करता है।

पंडित अरुण भादुड़ी — जीवन परिचय

जन्म और प्रारंभिक जीवन

पंडित अरुण भादुड़ी का जन्म 7 अक्टूबर, 1943 को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हुआ था। उनके पिता का नाम निरंजन भादुड़ी और माता का नाम मालतिमाला देवी था। बचपन से ही उन्हें पारंपरिक बंगाली संगीत और क्षेत्रीय लोकगीतों का सुनना और अनुभव करना मिला, जिससे उनका संगीत के प्रति लगाव बढ़ा।

संगीत शिक्षा और प्रशिक्षण

शुरुआत में, अरुण भादुड़ी ने मोहमद ए. दाउद खान से संगीत की मौलिक शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने मोहमद सगीरुद्दीन खान से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की जटिलताओं, अलंकरणों और विशेषतावों पर अभ्यास किया।

बाद में वे ITC संगीत रिसर्च अकादमी के छात्र बने, जहाँ उन्हें उस्ताद इश्तियाक हुसैन खान से तालिम मिली। इसके अतिरिक्त, उन्होंने पंडित ज्ञान प्रकाश घोष से भी प्रशिक्षण लिया, जिन्होंने उन्हें शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय दोनों प्रकार के संगीत (जैसे ठुमरी, भजनों) की बारीकियाँ सिखाईं। उनकी शैली पर उस्ताद आमिर खान का भी असर पड़ा, और उन्होंने उनकी जुगलबंदी की शास्त्रीयता और भावात्मक गहराई को आत्मसात किया।

कलाकार और करियर

अरुण भादुड़ी को उनकी गहरी, मखमली आवाज और विस्तृत स्वर-रेंज के लिए जाना जाता था। वे न सिर्फ शास्त्रीय खयाल गायन में दक्ष थे, बल्कि बंगाली गीतों, भजनों और उप-शास्त्रीय गायकों में भी उनकी महारत थी। वे ITC Sangeet Research Academy में गुरु (शिक्षक) भी थे और कई छात्र-गायक उन्होंने तैयार किए। मीडिया में उनकी उपस्थिति मजबूत रही: वे रेडियो और टेलीविजन के "टॉप-ग्रेड कलाकार" थे। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी संगीत प्रस्तुतियाँ दीं — उनके संगीत समारोहों के निमंत्रण यूके, अमेरिका, कनाडा, जापान, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड, फिलीपीन और बांग्लादेश आदि से आए थे।

पुरस्कार और मान्यताएँ

वर्ष 2014 में उन्हें पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से बंगा विभूषण सम्मान दिया गया, यह राज्य का एक बहुत प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान है। उनकी शिक्षाशास्त्र में गहरी समझ और संगीत-साधना के प्रति समर्पण के कारण, उन्हें गुरु के रूप में व्यापक सम्मान मिला।निजी जीवन पंडित भादुड़ी बेहद सरल, विनम्र और समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे। उनका पारिवारिक जीवन भी संगीत से जुड़ा था: वे अपने परिवार (पत्नी, पुत्र) के साथ रहते थे। उनके कुछ प्रमुख शिष्य हैं: इंद्राणी मुखर्जी, तुषार दत्ता आदि।

अंतिम समय और निधन

पंडित अरुण भादुड़ी का निधन 17 दिसंबर, 2018 को कोलकाता में हुआ। उनके निधन का कारण क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिज़ीज़ और अन्य श्वसन संबंधी समस्याएँ थीं। उनकी मृत्यु से संगीत जगत में एक बड़े शून्य की अनुभूति हुई, और कई संगीत प्रेमियों और कलाकारों ने उनकी गहन साधना और योगदान को श्रद्धांजलि दी।

पंडित अरुण भादुड़ी की प्रमुख गायन शैलियां

पंडित अरुण भादुड़ी का संगीत व्यक्तित्व अत्यंत बहुआयामी था। उन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गहरी समझ के साथ-साथ उप-शास्त्रीय और क्षेत्रीय गायन शैलियों में भी महारत हासिल की। उनकी गायकी में परंपरा और नवाचार का संतुलित मिश्रण दिखाई देता था।

1. खयाल गायन

खयाल शैली उनके गायन का मूल आधार थी।

विशेषताएँ: रागों का विस्तृत आलाप और स्वराभिव्यक्ति तानों और मींड का सुविन्यस्त प्रयोग लय और ताल में प्राकृतिक सहजता उनकी खयाल गायकी में रामपुर सहसवान और किराना घराने का प्रभाव दिखाई देता था। भाव और शास्त्रीय संरचना का संतुलन उनकी खयाल शैली की पहचान थी।

2. ठुमरी

पंडित भादुड़ी की ठुमरी गायकी में भाव प्रधानता और लय-रचनात्मकता प्रमुख थी।

विशेषताएँ: शब्दों के भाव और अर्थ को संगीत के माध्यम से व्यक्त करना मधुर मीठास और अलंकरणों का सुंदर प्रयोगलय और ताल में लचीलापनउन्होंने ठुमरी को एक स्वतंत्र कला के रूप में प्रस्तुत किया, जो दर्शकों और आलोचकों दोनों को मंत्रमुग्ध कर देती थी।

3. दादरा

दादरा उनके उप-शास्त्रीय गायन में विशेष स्थान रखता था।

विशेषताएँ: हल्का, लयपूर्ण और भावपूर्ण गायन छोटे रागों और लयात्मक प्रयोगों के माध्यम से भाव व्यक्त करना दादरा में उनकी सहज प्रस्तुति और सुर-साधना ने इसे दर्शकों के लिए अत्यंत आकर्षक बना दिया।

4. भजन और भावगीत

धार्मिक और भक्तिपूर्ण गीतों में उन्होंने भावपूर्ण गायन और सरल अभिव्यक्ति को महत्व दिया।

विशेषताएँ: शास्त्रीय रागों का प्रयोग भजनों में भावनात्मक गहराई और भक्तिपूर्ण प्रस्तुति बंगाली और हिंदी दोनों भाषाओं में उनके भजन लोकप्रिय हुए।

5. अर्ध-शास्त्रीय और क्षेत्रीय शैलियाँ

उन्होंने बंगाली गीत, गज़ल और लोकगीतों में भी गायन किया।

विशेषताएँ: लय और धुन का स्वाभाविक प्रवाह शैलीगत विविधता और भावप्रधान प्रस्तुति इस बहुआयामी दृष्टिकोण ने उन्हें एक समग्र संगीतज्ञ और शिक्षक के रूप में प्रतिष्ठित किया।

विशेष योगदान

पंडित भादुड़ी ने परंपरा और नवाचार का संतुलन रखा, जिससे उनकी गायकी न केवल शास्त्रीय अनुशासन में सटीक थी बल्कि भाव और अभिव्यक्ति में भी अत्यंत आकर्षक थी।उनकी शैलियों का अध्ययन विभिन्न गायन तकनीकों, राग दृष्टि, और ताल प्रयोग की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अरुण भादुड़ी की गायन शैली – तुलनात्मक विश्लेषण

पंडित अरुण भादुड़ी की गायकी को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें समकालीन और परंपरागत गायकों की शैली से तुलना की जाए। उनके गायन में शास्त्रीय अनुशासन, भाव प्रधानता और नवाचार का अद्वितीय मिश्रण दिखाई देता है।

1. खयाल गायन में तुलना

पहलु	अरुण भादुड़ी	रामपुर सहसवान घराना	किराना घराना
आलाप	धीमा, विस्तारपूर्ण, भाव प्रधान	संरचित, गंभीर, शुद्ध	गहरी, मूर्धन्य शैली, कुछ हद तक आक्रामक
तान	सुगम, स्पष्ट और संतुलित	रचनात्मक, तकनीकी रूप से जटिल	तीव्र और लयपरक
भाव-अभिव्यक्ति	प्राकृतिक और सहज	औपचारिक, शास्त्रीय	गहन, भावनात्मक गहराई

विश्लेषण: अरुण भादुड़ी ने रामपुर सहसवान की तकनीकी सटीकता और किराना घराने की गहनता का समन्वय किया। उनका खयाल गायन तकनीक और भावनात्मक संतुलन में अद्वितीय था।

2. ठुमरी और दादरा में तुलना

पहलु	अरुण भादुड़ी	कालिदास / रवींद्र शैली	समकालीन ठुमरी गायन
भाव-प्रकाश	शब्दों और संगीत में गहराई	भाव प्रधान, अधिक शब्द केंद्रित	शैलीगत विविधता पर आधारित
लय-प्रयोग	लय में लचीलापन, ताल में स्वाभाविक प्रवाह	मध्यम गति, सरल ताल प्रयोग	लय विविध, कभी-कभी तकनीकी जटिल
प्रस्तुति शैली	भक्तिपूर्ण और आकर्षक	भावानुरागी, मधुर	शैलीगत अभिनव प्रयोग

विश्लेषण: ठुमरी और दादरा में भादुड़ी का विशेष योगदान उनकी भावपूर्ण प्रस्तुति और ताल संयोजन है। उन्होंने पारंपरिक शैली को आधुनिक संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत किया।

3. भजन और अर्ध-शास्त्रीय शैली में तुलना

पहलु	अरुण भादुड़ी	शास्त्रीय भजन गायक	लोक/अर्ध-शास्त्रीय गायक
भावपूर्णता	गहन, भावनात्मक	औपचारिक, भक्ति प्रधान	सरल, लोक-सुर पर आधारित
स्वर और उच्चारण	शास्त्रीय शुद्धता के साथ	सरल उच्चारण	क्षेत्रीय उच्चारण और शैली
शास्त्रीयता	राग आधारित, तकनीकी दक्षता	सीमित, भक्ति प्रधान	हल्का शास्त्रीय प्रभाव

विश्लेषण: भादुड़ी ने भजन और अर्ध-शास्त्रीय गायन में शास्त्रीय तकनीक और भावनात्मक सहजता का समन्वय किया, जिससे उनकी प्रस्तुति आकर्षक और सर्वसुलभ हुई।

4. समग्र तुलनात्मक निष्कर्ष

शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय का संतुलन: अरुण भादुड़ी ने खयाल, ठुमरी, दादरा और भजन में शास्त्रीय अनुशासन के साथ भाव प्रधानता को जोड़ा। परंपरा और नवाचार का मिश्रण: Rampur-Sahaswan और किराना घरानों की शास्त्रीय शैली का संयोजन उनके गायन में स्पष्ट है। भाव और तकनीक का सामंजस्य: उनकी तानों की स्पष्टता, आलाप का विस्तार, और ताल पर पकड़ अन्य समकालीन गायकों से अलग पहचान देती है। बहुआयामी गायन: उन्होंने शास्त्रीय, उप-शास्त्रीय और क्षेत्रीय गायन शैलियों में महारत प्राप्त कर संगीत के सर्वांगीण अनुभव को प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि पंडित अरुण भादुड़ी की गायन शैली अत्यंत बहुआयामी, भावप्रधान और शास्त्रीय अनुशासन में सटीक थी। उनके संगीत व्यक्तित्व में परंपरा और नवाचार का अद्वितीय मिश्रण दिखाई देता है।

मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

खयाल गायन में विशिष्टता: उन्होंने Rampur-Sahaswan और किराना घरानों की तकनीकी सटीकता और भावनात्मक गहराई का संतुलन स्थापित किया। आलाप, तान और मींड के प्रयोग में उनका स्वर सहज, शास्त्रीय और आकर्षक था।

उप-शास्त्रीय शैली में योगदान: ठुमरी, दादरा और भजन में उनकी विशेषता भावपूर्ण प्रस्तुति और ताल-रचनात्मकता थी। उन्होंने शास्त्रीय अनुशासन के साथ भावात्मक गहराई का संतुलन बनाए रखा, जिससे उनकी प्रस्तुति दर्शकों और आलोचकों दोनों को समान रूप से प्रभावित करती थी।

भाषा और शैली में बहुआयामीता: पंडित भादुड़ी ने बंगाली, हिंदी और अन्य क्षेत्रीय गीतों में भी महारत हासिल की। उन्होंने शास्त्रीय संगीत की तकनीकी जटिलताओं को आम जनता के लिए सुगम और आकर्षक बनाया।

तुलनात्मक दृष्टि से: उनकी शैली समकालीन और परंपरागत गायकों की तुलना में अनूठी थी। उन्होंने शास्त्रीय अनुशासन, नवाचार और भावात्मक संतुलन का अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत किया।

संगीत शिक्षण और विरासत: उन्होंने कई शिष्यों को प्रशिक्षित किया और ITC संगीत अनुसंधान अकादमी में शिक्षा के माध्यम से अपनी शैली और दृष्टि को आगे बढ़ाया। उनकी बहुआयामी शैली और शास्त्रीय साधना ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्थायी योगदान दिया।

पंडित अरुण भादुड़ी का संगीत केवल सुनने का अनुभव नहीं, बल्कि एक भावपूर्ण, तकनीकी और सांगीतिक गहनता वाला अध्ययन है। उनका योगदान शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय दोनों संगीत शैलियों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन से उनके गायन की विविधता, शैलीगत विशेषताएँ और संगीत परंपरा में उनका स्थान स्पष्ट रूप से सामने आया।

संदर्भ ग्रंथ

भट्ट, रा. (2003). हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का इतिहास. नई दिल्ली: प्रकाशन घर।
चतुर्वेदी, के. (2010). भारतीय शास्त्रीय गायन की शैलियां. मुंबई: संगीत विज्ञान प्रकाशन।
कुमारी, एस. (2015). उप-शास्त्रीय गायन: ठुमरी, दादरा और भजन का विश्लेषण. कोलकाता: संगीत नाटक अकादमी।
Bhaduri, Arun. Katha Sur Sristi. 2nd ed., Sarbabharatiya Sangeet O Sanskriti Parishad, 2018.
Bhaduri, Arun. Gaan Amar Prashmoni., Sarbabharatiya Sangeet O Sanskriti Parishad,2010.
Bhaduri, Arun. AstaRagini. Antorjatik Prakashan,2016.
Bhaduri, Arun, Prasanga kheyal., Sarbabharatiya Sangeet O Sanskriti Parishad,2019.
सेंगुप्ता नाथ, शि. (2018). भारतीय शास्त्रीय संगीत: स्वर और ताल का अध्ययन. कोलकाता: नाद नर्तन प्रकाशन।
पांडेय, वी. (2007). खयाल गायन की तकनीक और परंपरा. लखनऊ: संगीत संगम।
राय, एच. (2012). भारतीय शास्त्रीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली: संगीत संस्कृति प्रकाशन।
भारतीय संगीत अकादमी (Sangeet Natak Akademi). (2010). भारतीय शास्त्रीय संगीत: दस्तावेज और शोध पत्र. नई दिल्ली: SNA प्रकाशन।